अध्याय - 16

गरीबी, भारत के समक्ष एक आर्थिक चुनौती

हम पढ़ेंगे

16.1 गरीबी से आशय।
16.2 भारत में गरीबी की माप।
16.3 राज्यवार गरीबी रेखा के नीचे जनसंख्या।
16.4 निर्धनता के कारण।
16.5 भारत में गरीबी निवारण के प्रमुख कार्यक्रम।

भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था वाला देश है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विशेषकर नियोजन काल में भारतीय अर्थव्यस्था के विविध क्षेत्रों में मात्रात्मक और गुणात्मक सुधार हुआ हैं। परिणामत: भारतीय अर्थव्यवस्था की गणना, आज विश्व की प्रमुख शक्तिशाली अर्थव्यवस्थाओं में होने लगी है। अर्थव्यवस्था के विकास से जहाँ एक ओर आर्थिक विकास की उच्च दिशायें प्राप्त हुई हैं, वहीं दूसरी ओर कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं जैसे- गरीबी, तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या, व्यापक बेरोजगारी, तेजी से बढ़ती हुई कीमतें अर्थात् महंगाई की समस्या, क्षेत्रीय असंतुलन एवं बढ़ती हुई आर्थिक असमानताएँ, बुनियादी सुविधाओं की कमी तथा खाद्यान्न असुरक्षा आदि। इन सभी आर्थिक चुनौतियों में सबसे गंभीर है, गरीबी की समस्या जिसकी विस्तृत विवेचना हम इस अध्याय में करेंगे।

16.1 गरीबी से आशय

धन का अभाव गरीबी को जन्म देता है। केवल कुछ व्यक्तियों की निम्न आर्थिक स्थिति ही गरीबी को जन्म नहीं देती है, बल्कि किसी समाज में व्यक्तियों का बहुत बड़ा भाग जब जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहता है तब इस स्थिति को 'गरीबी' के नाम से जाना जाता है। तात्पर्य यह है कि यदि किसी समाज में अधिकांश व्यक्तियों को रहने, खाने और पहनने की अति आवश्यक सुविधायें उपलब्ध न हों तो हम ऐसी स्थिति को 'गरीबी' के नाम से जानते है।

गरीबी की पहचान तो बहुत सरल है, किन्तु इसको परिभाषित करना थोड़ा मुश्किल है। जब हम अपने आस-पास टूटे झोपड़ों एवं झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले परिवारों, रेलवे स्टेशनों और चौराहों पर भीख मांगते भिखारियों, खेतों में काम करने वाले मजदूरों को देखते हैं तो उनके अभावग्रस्त जीवन को देखकर गरीबी को पहचान सकते हैं। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले व्यक्ति 'गरीबी' की परिभाषा में आते हैं। 'गरीबी रेखा' से आशय नागरिकों के उस न्यूनतम आर्थिक स्तर से है जो उनके जीवन निर्वाह के लिये आवश्यक होता है।

16.2 भारत में गरीबी की माप

सामान्यत: गरीबी को मापने के लिये दो मानदण्डों का प्रयोग किया जाता है। प्रथम, निरपेक्ष गरीबी, द्वितीय सापेक्ष गरीबी ।

निरपेक्ष गरीबी : निरपेक्ष गरीबी से अभिप्राय मानव की मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र, स्वास्थ्य सुविधा आदि) की पूर्ति हेतु पर्याप्त वस्तुओं एवं सेवाओं को जुटा पाने में असमर्थता से है। इसमें वे सभी व्यक्ति सम्मिलित किए जाते हैं जो गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करते हैं।

सापेक्ष गरीबी : सापेक्ष गरीबी से अभिप्राय आय की असमानताओं से है। सापेक्ष गरीबी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक असमानता अथवा क्षेत्रीय आर्थिक असमानताओं का बोध कराती है। इसका आकलन समय-समय पर भारतवर्ष में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या का राष्ट्रीय सर्वेक्षण संगठन (एन. एस. एस. ओ.) द्वारा करवाया जाता है।

16.3 राज्यवार गरीबी रेखा के नीचे जनसंख्या

भारत में गतवर्षों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या में निरन्तर कमी आई है। वर्ष 1973-1974 में 54.9 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन कर रहे थे। वर्ष 1983 में गरीबी दर घटकर 44.7 प्रतिशत तथा पुन: 1993-94 में 36 प्रतिशत एवं 1999-2000 में देश में गरीबी की दर 26.10 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 2006-07 में गरीबों की संख्या 22.01 करोड़ अर्थात् 19.3 रह जाने का अनुमान है।

गरीबी रेखा

योजना आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञ दल "Task force on minimum Needs and Effective Consumption Demand" के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में प्रति व्यक्ति 2,400 कैलोरी प्रति दिन तथा शहरी क्षेत्र में प्रति व्यक्ति 2,100 कैलोरी प्रतिदिन का पोषण प्राप्त न करने वाला व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे माना जाता है। 'गरीबी रेखा' का विचार सर्वप्रथम भारतीय अर्थशास्त्री श्री दाण्डेकर ने दिया था।

भारत में गरीबी-रेखा के नीचे की जनसंख्या
(प्रतिशत में)

क्षेत्र	1993-94	1999-2000	2006-07
ग्रामीण	37.3	27.1	21.1
शहरी	33.4	23.6	15.1
कुल प्रतिशत	36.0	26.1	19.3

स्रोत : भारतीय अर्थव्यवस्था रिपोर्ट, 2006

केंद्रीय ग्रामीण विकास मन्त्रालय के अनुसार गरीबी रेखा से आशय ऐसे परिवार से है, जिसकी वार्षिक आय, विभिन्न राज्यों में 13,900 रू. से 16,900 रू. वार्षिक तक है। यह आय पांच व्यक्तियों के औसत परिवार के लिए है। प्रत्येक राज्य गरीबी रेखा की अलग सीमा तय कर सकता है। भारत में लगभग 22 करोड़ अर्थात् 19.3% लोग गरीबी की रेखा के नीचे जीवनयापन करते हैं, लेकिन तालिका को देखने से पता चलता है कि भारत में गरीबी का प्रतिशत निरन्तर घटता जा रहा है।

भारत में विभिन्न राज्यों में गरीबी की व्यापकता समान नहीं है। योजना आयोग द्वारा सितम्बर 2005 को जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत का सबसे गरीब जिला डांग (गुजरात) है। दूसरे स्थान पर राजस्थान का बाँसवाड़ा जिला व तीसरे स्थान पर मध्यप्रदेश का झाबुआ जिला है। भिन्न-भिन्न राज्यों में गरीबी की 2006-07 की अनुमानित स्थिति को तालिका में दर्शाया गया है। **तालिका के अनुसार भारत में बिहार, उड़ीसा व सिक्किम राज्य में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों की संख्या सबसे अधिक है।**

भारत में राज्यवार गरीबी रेखा के नीचे जनसंख्या

राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	2006 अनुमानित	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	2006
उड़ीसा	41.04	आन्ध्रप्रदेश	8.49
बिहार	43.18	लक्षद्वीप	4.59
मध्यप्रदेश	29.52	राजस्थान	12.11
सिक्किम	33.78	गुजरात	2.00
असम	31.33	केरल	3.61
त्रिपुरा	31.88	हरियाणा	2.00
मेघालय	31.14	दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र	2.00

राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	2006 अनुमानित	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	2006
अरूणाचल प्रदेश	29.33	हिमाचल प्रदेश	2.00
नागालैण्ड	31.86	पंजाब	2.00
उत्तरप्रदेश	24.67	चण्डीगढ़	2.00
मणिपुर	30.52	दमनदीव	2.00
पश्चिम बंगाल	18.30	गोवा	2.00
महाराष्ट्र	16.18	जम्मू कश्मीर	N.A.
पाण्डिचेरी	32.00		
तमिलनाडु	6.61		
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	5.82		
कर्नाटक	7.85		
मिजोरम	20.76		
दादर नगर हवेली	2.00		

स्रोत : भारतीय अर्थव्यवस्था, 2006 (वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)

भारत एक धनी देश है, किन्तु यहां के निवासी निर्धन हैं

भारत के संदर्भ में प्राय: यह कहा जाता है कि भारत एक धनी देश है किन्तु इसके निवासी निर्धन हैं। यह कथन विरोधाभासी है। कथन के पहले भाग के अनुसार भारत एक धन सम्पन्न राष्ट्र है तथा दूसरे भाग के अनुसार भारतवासी निर्धन हैं। ये विरोधाभास किस प्रकार एक सत्य तथ्य है इसे हम एक-एक करके समझ सकते हैं।

भारत एक धनी देश है

प्राचीन समय से ही भारत भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से एक धनी देश माना जाता है। यहाँ विकास के लिए संसाधनों का बाहुल्य है। भारत का क्षेत्रफल विस्तृत है, प्राकृतिक बनावट अच्छी है, जलवायु भी अनुकूल है, वन सम्पदा पर्याप्त मात्रा में है, शक्ति के लिए आवश्यक साधन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं तथा श्रम शक्ति भी पर्याप्त है। भारत को धनी देश कहने के मुख्य आधार निम्नलिखित हैं-

1. **भौगोलिक स्थिति** - भारत की भौगोलिक स्थिति विकास की दृष्टि से अनुकूल है। उत्तर में हिमालय सजग प्रहरी के रूप में विद्यमान है। देश की प्रायद्वीपीय एवं हिन्द महासागर में स्थिति भारत को विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक मार्गों से जोड़ती है। हवाई मार्ग की दृष्टि से भी इसकी स्थिति अच्छी है। इस प्रकार भारत की भौगोलिक स्थिति आर्थिक विकास एवं विदेशी व्यापार के लिए बहुत उपयुक्त है।

2. **मानसूनी जलवायु**- भारत में मानसूनी जलवायु दशाएँ पायी जाती हैं जिसके फलस्वरूप देश में विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादन किये जाते हैं। इससे हमारे देश के उद्योगों को भरपूर कच्चा माल मिलता है। विविध जलवायु दशाओं के कारण ही हम विभिन्न प्रकार के खाद्यान्न तथा नकद फसलें पैदा कर सकते हैं।

3. **अपार जलशक्ति**- हिमालय से निकलने वाली सतत्वाहिनी नदियों से वर्ष भर पानी मिलता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए इन नदियों का अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है।आज हम इस जलशक्ति सेसिंचाई करते हैं और हजारों किलोवाट बिजली पैदा करते हैं लेकिन आज भी हम इनका पूर्ण उपयोग नहीं करपा रहे हैं।

4. **वन सम्पदा–** भारत के कुल क्षेत्रफल का 19.39 प्रतिशत वन क्षेत्र हैं। वनों से हमें ईंधन, तेल, गोंद, इमारती लकड़ी, कत्था, लाख, चमड़ा रंगने के पदार्थ प्राप्त होते हैं। यदि भारतीय वन सम्पदा का कुशलता से दोहन किया जाय तो यह देश के विकास हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

5. **शक्ति के साधन व खनिजों की प्रचुर उपलब्धता–** खनिज एवं शक्ति के साधनों की दृष्टिसे भारत एक धनी देश है। लोहे का भण्डार विश्व के कुल भण्डार का एक चौथाई है। अभ्रक व मैंगनीज उत्पादन में भी भारत आगे है। कोयला, बॉक्साइट, जिप्सम के भण्डार भी प्रचुर मात्रा में हैं। अणु शक्ति उत्पन्न करने के लिए आवश्यक पदार्थ थोरियम, यूरेनियम आदि का पर्याप्त भण्डार है।

6. **जनशक्ति–** भारत की लगभग 110 करोड़ जनसंख्या किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम है। अगर इस जनशक्ति का योजनाबद्ध उपयोग किया जाय तो देश के विकास में तेजी ला सकते हैं।

उपरोक्त संसाधनों से धनी होने के बावजूद भी भारत के निवासी निर्धन हैं।

16.4 भारत में निर्धनता के कारण

भारत में गरीबी के लिये उत्तरदायी प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं –

1. **दोषपूर्ण विकास रणनीति :** भारत में विकास के साथ गरीबी का विरोधाभास देखने में आता है, क्योंकि अर्थव्यवस्था के विकास का लाभ कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित हो गया है। परिणामस्वरूप गरीब और गरीब हो रहा है और अमीर और अधिक अमीर हो रहे हैं। शिक्षित व सुविधा सम्पन्न व्यक्तियों के पास आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध है जबकि धनाभाव के कारण गरीब व्यक्ति उच्च व तकनीकी शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं। शासन द्वारा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए गए है लेकिन रोजगार के अवसरों में बहुत ही धीमी वृद्धि हुई है।

2. **बेरोजगारी :** भारत में व्यापक बेरोजगारी है। एक अनुमान के अनुसार भारत में लगभग 5 करोड़ लोग बेरोजगार हैं। बेरोजगारों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जो गरीबी के लिए उत्तरदायी कारक है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी और अल्प रोजगार के साथ ही अदृश्य बेरोजगारी भी विद्यमान है। बेरोजगारों की बढ़ती संख्या प्रति व्यक्ति उत्पादकता एवं आय के स्तर को कम करती है।

3. **प्रति व्यक्ति निम्न आय :** भारत में प्रति व्यक्ति आय कम होने से यहाँ गरीबी व्याप्त है। विश्व के विकसित राष्ट्रों की तुलना में भारत में प्रतिव्यक्ति आय का स्तर बहुत कम है। विश्व बैंक की वर्ष 2004 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की प्रति व्यक्ति आय मात्र 480 डालर (लगभग 24,000/–) है। प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर गरीबी का एक मुख्य कारण है।

गरीबी के कारण निर्धनता का दुष्चक्र चलता है और निर्धनता बढ़ती जाती है।

प्रति व्यक्ति कम आय होने से बचत कम व माँग कम हो जाती है इसके परिणामस्वरूप पूंजी निर्माण भी कम होता है, इससे उत्पादन और उत्पादन से रोजगार व रोजगार से आय कम होती है। इस प्रकार निर्धनता बढ़ती चली जाती है।

निर्धनता का दुष्चक्र

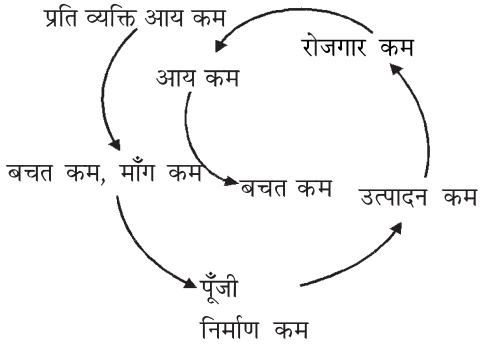

4. **तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या :** भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में भारत का दूसरा स्थान है। भारत की जनसंख्या में लगभग 1.81 करोड़ व्यक्ति प्रतिवर्ष जुड़ जाते हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1991–2001 दशक के दौरान 1.93 प्रतिशत रही है। इससे प्रति व्यक्ति आय और उपभोग कम हो जाता है, जीवन स्तर में कमी आती है और गरीबी को बढ़ावा मिलता है।

5. **प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग :** भारत में खनिज, वन सम्पदा, व जनशक्ति आदि साधन पर्याप्त मात्रा में हैं। लेकिन इनका अभी तक उपयुक्त ढंग से उपयोग नहीं हो सका है। प्राकृतिक संसाधनों का अल्प विदोहन भी गरीबी का एक कारण है।

6. **मुद्रा प्रसार और मूल्य वृद्धि :** भारत में बढ़ते विकास कार्यों को पूरा करने के लिये भारी मात्रा में धन व्यय किया जाता है। इससे अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी दबाव पैदा होते हैं और कीमतों में वृद्धि हो जाती है। परिणामस्वरूप गरीबी की समस्या और भी गंभीर हो जाती है।

7. **तकनीकी ज्ञान का निम्न स्तर :** भारत में शिक्षा, तकनीकी एवं अनुसंधान आदि सुविधाओं का अभाव है। भारत की लगभग 36 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर है। तकनीकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण की सुविधाओं के अभाव के कारण उत्पादकता में कमी आती है।

8. **निम्न उत्पादकता :** भारत में उत्पादकता का स्तर निम्न है, जिससे संसाधनों से उचित प्रतिफल प्राप्त हो नहीं पाते हैं तथा नागरिक गरीब रह जाते हैं। विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में निम्न उत्पादकता ग्रामीण गरीबी का एक मुख्य कारण है।

9. **कृषि में अनिश्चितता :** भारत वर्ष में अर्थव्यवस्था मूलत: कृषि पर आधारित है। कृषि में मानसून की अनिश्चितता रहती है जिससे उत्पादन में उतार–चढ़ाव होते रहते हैं। प्राकृतिक आपदाओं के कारण कृषि उत्पादन विपरीत रूप से प्रभावित होता रहता है जो कि गरीबी का कारण बनता है।

10. **परिवहन एवं संचार साधनों का अभाव :** भारत में परिवहन एवं संचार साधनों का पूर्ण विकास न हो पाने के कारण कृषि, उद्योग व सेवा क्षेत्र का तीव्र विकास नहीं हो पा रहा है।

11. **सामाजिक कारण :** भारत में प्रचलित सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण लोग अपनी आय का एक बड़ा भाग विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों पर व्यय कर देते हैं, जिससे एक ओर बचत में कमी आती है व दूसरी ओर ऋणग्रस्तता बढ़ती है। इसके अलावा अज्ञानता, भाग्यवादिता, रूढ़िवादिता भी भारत में गरीबी में वृद्धि के कारण हैं।

यहाँ यह प्रश्न विचारणीय है कि पर्याप्त प्राकृतिक सम्पदा सम्पन्न राष्ट्र होते हुए भी भारत एक निर्धन राष्ट्र है और भारतवासी गरीबी एवं बेरोजगारी का जीवन–यापन कर रहे हैं। भारत में सम्पन्नता के साधन तो हैं किन्तु सम्पन्नता के इन साधनों का उचित विदोहन न होने के कारण भारतीय निवासी निर्धनता में जीवन–यापन कर रहे हैं।

16.5 भारत में गरीबी निवारण के प्रमुख कार्यक्रम

भारत में गरीबी की समस्या के समाधान के प्रति भारतीय योजनाकार शुरू से ही चिन्तित रहे हैं। इस दिशा में जहां एक ओर आर्थिक संमृद्धि को बढ़ाने का प्रयास किया गया है वहीं दूसरी ओर गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को अपनाया गया। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की आवश्यकतायें पूरी करने के लिये सरकार ने अनेक परियोजनाएँ शुरू की हैं। गरीबी निवारण के प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित हैं–

1. **स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना :** 1 अप्रैल 1999 से आरंभ की गई इस योजना का उददेश्य गरीब परिवारों को बैंक ऋण एवं सरकारी अनुदान के माध्यम से स्वसहायता समूहों के रूप में संगठित कर तीन

वर्षों की अवधि में गरीबी रेखा से ऊपर लाना है। इस कार्यक्रम में ग्रामीण निर्धनों के लिये पर्याप्त अतिरिक्त आमदनी जुटाने का लक्ष्य भी रखा गया है। यह जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के माध्यम से कार्यान्वित की जा रही है।

2. स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना : 11 दिसम्बर 1997 को यह योजना शहरी क्षेत्रों में गरीबी निवारण के लिये प्रारंभ की गई। योजना का उद्देश्य शहरी गरीबों को स्वरोजगार उपक्रम स्थापित करने के लिये वित्तीय सहायता देना है, तथा सवेतन रोजगार सृजन करने के लिये उत्पादन परिसम्पत्तियों का निर्माण करना है।

3. प्रधानमंत्री रोजगार योजना : यह योजना 2 अक्टूबर 1993 से प्रारंभ की गई। इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों तथा छोटे शहरों के 18 से 35 वर्ष आयु वर्ग के शिक्षित बेरोजगारों को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है।

4. ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम : अप्रैल 1995 में यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों तथा छोटे कस्बों में परियोजनाएँ लगाने और रोजगार के अवसर उत्पन्न करने के लिये आरंभ की गई।

5. अन्नपूर्णा योजना : 1 अप्रैल 2000 से यह योजना प्रारम्भ की गई। योजना का उद्देश्य 65 वर्ष या उससे अधिक उम्र के उन लोगों को खाद्यान्न-सुरक्षा प्रदान कराना है, जो राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना के अन्तर्गत पेंशन प्राप्त करने के पात्र थे, परन्तु उन्हें पेंशन नहीं मिल रही है। इस योजना के अंतर्गत प्रति व्यक्ति 10 किलोग्राम खाद्यान्न प्रति माह मुफ्त दिया जाता है। वर्ष 2002-03 में राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम को इस योजना में मिला दिया गया।

6. जनश्री योजना : गरीब वर्ग को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से अगस्त 2000 में इस योजना को प्रारम्भ किया गया। योजना में लाभार्थी को स्वाभाविक मृत्यु की दशा में रूपये 20,000, दुर्घटना में मृत्यु या स्थायी विकलांगता पर रूपये 50,000 तथा आंशिक विकलांगता पर 25,000 रुपये दिये जाते हैं।

7. सम्पूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजना : यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्यान्न सुरक्षा के साथ-साथ रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए प्रारम्भ की गई। योजना में काम में लगे मजदूरों को दैनिक मजदूरी के रूप में न्यूनतम 5 किलो अनाज और न्यूनतम 20 प्रतिशत मजदूरी नकद दी जाती है। योजना का लक्ष्य समाज के कमजोर वर्गों को सुरक्षा प्रदान करना है।

8. ग्रामीण समृद्धि योजना : इस योजना को प्रारम्भ करने की घोषणा मार्च, 1999 में की गई। वर्तमान में प्रचलित जवाहर रोजगार योजना को इस प्रकार परिवर्तित किया जायेगा कि सभी कोष ग्राम पंचायत के हाथ में व्यय करने के लिए हो, जिससे वे ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में उसका उपयोग कर सकें । पंचायतों के पास यह अधिकार होगा कि वे कार्य के संबंध में वार्षिक योजनाएँ बनाएँ तथा उन्हें क्रियान्वित करें।

9. अन्त्योदय अन्न योजना : 25 दिसम्बर, 2001 से शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत शामिल गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वालों को खाद्यान्न उपलब्ध कराना है। इस योजना में देश के 1.50 करोड़ गरीब परिवारों को प्रति माह 35 किलोग्राम अनाज विशेष रियायती कीमत पर उपलब्ध कराया जाता है। इस योजना के अंतर्गत जारी किये जाने वाले गेहूँ एवं चावल का केन्द्रीय निर्गम मूल्य क्रमशः 2 रुपये तथा 3 रुपये प्रति किलोग्राम है।

10. महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम (2005) : इसका मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक निर्माण कार्यक्रम के अधीन हर वर्ष प्रत्येक ग्रामीण, शहरी गरीब तथा निम्न मध्यम वर्ग के परिवार के एक वयस्क व्यक्ति को कम से कम 100 दिन रोजगार उपलब्ध कराना है। इसके अंतर्गत माँग करने पर 15 दिन के अन्दर काम उपलब्ध कराना अनिवार्य है। यदि निश्चित समय में काम उपलब्ध नहीं कराया जायेगा, तो सम्बन्धित व्यक्ति को बेरोजगारी भत्ता प्रदान किया जाएगा। भत्ता न्यूनतम मजदूरी का कम से कम एक तिहाई होगा। 2 फरवरी 2006 को देश के सर्वाधिक पिछड़े 200 जिलों में इसे लागू कर दिया गया है।

अदृश्य बेरोजगारी : कृषि क्षेत्र में पाई जाने वाली यह बेरोजगारी उस स्थिति का सूचक है जब श्रमिकों की सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है, अर्थात् इन व्यक्तियों को कृषि क्षेत्रों से हटाकर अन्यत्र भेजे जाने पर कृषि क्षेत्र की उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता।

अल्प रोजगार : जब व्यक्ति अपनी कार्यक्षमता के अनुसार कार्य न पाकर अपनी योग्यता एवं क्षमता से कम स्तर वाला कार्य करता है, तब अल्प रोजगार की श्रेणी में आता है।

प्रति व्यक्ति आय : जो कि किसी व्यक्ति के द्वारा एक वित्तीय वर्ष में औसत आय के रूप में प्राप्त की जाती है।

चक्रीय बेरोजगारी : व्यापार चक्र की मन्दी के समय उत्पन्न बेरोजगारी चक्रीय बेरोजगारी कहलाती है।

मुद्रा प्रसार : मुद्रा प्रसार या मुद्रा स्फीति वह अवस्था है, जिसमें मुद्रा का मूल्य गिर जाता है और कीमतें बढ़ जाती हैं।

मूल्य वृद्धि : किसी फर्म के उत्पादन के मूल्य तथा अन्य फर्मों में खरीदे गए आदानों की लागत का अन्तर।

प्राकृतिक संसाधन : प्रकृति द्वारा मनुष्य को प्रदान किये गये वे नि:शुल्क उपहार जो आर्थिक विकास में सहायक होते हैं।

अभ्यास

सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1. आय स्तर की तुलना का आधार निर्धारण होता है-
   (i) निरपेक्ष गरीबी (ii) सापेक्ष गरीबी
   (iii) पूर्ण गरीबी (iv) इनमें से कोई नहीं।
2. भारत में सर्वाधिक गरीब जनसंख्या वाला राज्य है-
   (i) मेघालय (ii) असम
   (iii) बिहार (iv) मध्यप्रदेश
3. रोजगार गारन्टी कानून (2005) में कम से कम कितने दिन का रोजगार उपलब्ध कराया जाता है?
   (i) 25 दिन (ii) 50 दिन
   (iii) 75 दिन (iv) 100 दिन

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. एक व्यक्ति द्वारा एक वित्तीय वर्ष में प्राप्त औसत आय ..... आय कहलाती है।
2. ..... गरीबी से अभिप्राय आय की असमानता से है।
3. भारतीय अर्थशास्त्री दाण्डेकर ने सर्वप्रथम .....का विचार दिया।
4. मध्यप्रदेश का सबसे गरीब जिला ..... है।

5. भारत में गरीबी मापने हेतु सापेक्ष और ..... गरीबी है।

सत्य/असत्य बताइए

1. जनसंख्या वृद्धि गरीबी को बढ़ाती है।
2. भारत का सबसे गरीब राज्य पंजाब है।
3. रोजगार गारंटी अधिनियम के अन्तर्गत 5 किलो अनाज एवं न्यूनतम 20 प्रतिशत मजदूरी दी जाती है।
4. भारत में शहरी क्षेत्र में 2,100 कैलोरी प्रतिदिन का पोषण प्राप्त न करने वाला व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे माना जाता है।
5. 2005 की रिपोर्ट के अनुसार भारत का सबसे गरीब जिला झाबुआ मध्यप्रदेश है।

अतिलघुत्तरीय प्रश्न :

1. भारत के समक्ष उपस्थित प्रमुख आर्थिक समस्यायें कौन-कौन सी है?
2. गरीबी की रेखा से क्या आशय है?
3. भारत में सर्वाधिक गरीब जनसंख्या वाले तीन राज्यों के नाम लिखिए।
4. गरीबी के लिए उत्तरदायी सामाजिक कारण लिखिए।

लघुत्तरीय प्रश्न :

1. जनसंख्या वृद्धि किस प्रकार गरीबी को बढ़ाती है, समझाइये।
2. विगत् वर्षों में भारत में गरीबी की स्थिति में क्या परिवर्तन आया है? लिखिए।
3. भारत में राज्यवार गरीबी की क्या स्थिति हैं? समझाइये।
4. रोजगार गारन्टी कार्यक्रम 2005 की प्रमुख विशेषतायें बताइये।
5. गरीबी को मापने हेतु कौन से मानदण्ड हैं? बताइये।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न :

1. भारत में गरीबी के लिए उत्तरदायी कारण कौन से है?
2. भारत में गरीबी निवारण के प्रमुख कार्यक्रमों को संक्षेप में लिखिए।
3. भारत एक सम्पन्न देश है किन्तु इसके निवासी निर्धन हैं? इस कथन को समझाइये।